शिक्षकों को आपस में अकादमिक चर्चाओं में सहयोग हेतु

चर्चा पत्र

वर्ष–6 अंक–2

JULY 2020

इस कोविड काल में सीखें अपने आसपास से

शिक्षा का अधिकार
सर्व शिक्षा अभियान
सब पढ़ें सब बढ़ें

राज्य परियोजना कार्यालय
समग्र शिक्षा छ.ग.

एजेंडा एक- बच्चों का शाला में प्रवेश

कोरोना तालाबंदी की वजह से स्कूल बंद हैं | अब स्कूलों में प्रवेश को प्रारंभ किया जा रहा है | शाला प्रवेश हेतु निम्नलिखित बातों पर ध्यान देंगे-

- जो विद्यार्थी सत्र 2019-20 में कक्षा एक से सात तक की कक्षाओं में पढ़ रहे थे, उन्हें शिक्षा के अधिकार के अनुसार अगली कक्षाओं में प्रवेश देते हुए उनके नाम अगले कक्षा की पंजी में संधारित करें | कक्षा पहली से आठवीं तक प्रवेश के लिए पालकों या बच्चों को शाला में आना नहीं पडेगा | ये प्रवेश ओटोमेटिक होंगे और कक्षा शिक्षक इन पंजियों को अद्यतन कर लेंगे |
- कक्षा पहली में प्रवेश के लिए निर्धारित आयु के बच्चों का स्थानीय स्तर पर शिक्षकों के माध्यम से सर्वे करवाते हुए एवं आंगनबाडी से सूची प्राप्त कर इन सभी का प्रवेश कक्षा पहली में बीस अगस्त तक पूर्ण करावें |
- कक्षा छठवीं में प्रवेश हेतु प्राथमिक शाला के प्रधान पाठक अपनी शाला के कक्षा पांचवीं के कक्षोन्नत बच्चों की सूची टी.सी. सहित पोषित उच्च प्राथमिक शालाओं को प्रदान करते हुए कक्षा छठवीं में प्रवेश की कार्यवाही पूर्ण करवाएं |
- कक्षा आठवीं के बच्चों की टी सी एवं अन्य कागजात निकट के फीडर स्कूल में पहुंचाना होगा जहां नियमित रूप से आपके स्कूल के बच्चे प्रवेश लेते हैं | कक्षा नवमी एवं ग्यारहवीं में भी प्रवेश की प्रक्रिया एक अगस्त से प्रारंभ की जानी है | इस प्रवेश हेतु विद्यार्थी/ पालक शाला में जाकर प्रवेश की प्रक्रिया बीस अगस्त तक पूरी करवाएंगे |
- कोविड की वजह से बाहर के राज्यों से छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिलों में आए शाला जाने योग्य आयु-वर्ग के बच्चों की सूची कंटेंनमेंट सेंटर में पंजी में संधारित करने हेतु निर्देश पूर्व में जारी किए गए थे, तदनुसार आयु वर्ग के आधार पर निर्धारित कक्षा में प्रवेश की पात्रता रखने वाले बच्चों को भी प्रवेशित किया जाना है | कक्षा एक से आठ तक प्रवेश हेतु पालकों द्वारा बच्चों की आयु की स्व-घोषणापत्र प्रस्तुत करने पर भी प्रवेश दिया जा सकता है | कक्षा नवमीं एवं ग्यारहवीं में इस प्रकार के बच्चों को वर्तमान में अस्थाई प्रवेश दिया जाए |
- बच्चों के प्रवेश के संबंध में स्कूलों में सर्वे एवं अन्य कार्य से जुड़े सभी शिक्षक/ कर्मचारी/पालक/ विद्यार्थी शाला प्रवेश के दौरान सामान्य प्रशासन एवं स्कूल शिक्षा विभाग/स्वास्थ्य विभाग द्वारा कोविड-19 के परिप्रेक्ष्य में जारी विभिन्न दिशानिर्देशों का कडाई से पालन किया जाना सुनिश्चित करें |

आपदा को अवसर में बदलते हुए इस बार कोई भी बच्चा प्रवेश से न छूट जाए, इसका सभी लोग कृपया ध्यान रखेंगे | शाला त्यागी की संख्या ज्यादा होने पर सूचित करें |

एजेंडा दो- बच्चों के सीखने की निरंतरता

भारत सरकार द्वारा राज्यों को बच्चों की शिक्षा को सतत रूप से जारी रखे जाने बाबत विभिन्न वैकल्पिक उपायों को लागू किए जाने का सुझाव दिया गया है | इस परिप्रेक्ष्य में राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में कुछ स्वस्फूर्त शिक्षकों द्वारा समुदाय के साथ मिलकर स्वास्थ्य एवं सुरक्षा संबंधी सभी दिशानिर्देशों का पालन करते हुए कुछ नवाचारी प्रयास किए गए हैं | इन प्रयासों की सफलता को देखते हुए सुरक्षा संबंधी सभी निर्देशों का पालन करते हुए गैर-संक्रमण वाले क्षेत्रों में इनका विस्तार समुदाय के निर्णय के आधार पर किया जाना प्रस्तावित है | कुछ उपाय इस प्रकार हैं-

1. मोबाइल स्कूल या पढई तुंहर मुहल्ला- ऐसी पंचायतें जिनमें बच्चे दूर दूर अलग अलग बसाहटों से आते हैं, वंहा मोबाइल स्कूल या पढई तुंहर मुहल्ला नामक योजना प्रस्तावित की जाए | इस योजना में इच्छुक शिक्षक अलग अलग बसाहटों में बच्चों को समय सारिणी एवं रूट चार्ट बनाकर उपयुक्त स्थान पर जाकर वहां छोटे छोटे समूहों में बैठे ग्रुप को सीखने हेतु प्रेरित करेंगे और उन्हें नियमित सिखाने में सहयोग करने समुदाय से कुछ इच्छुक लोगों की सेवाएं ले सकेंगे | इस कार्य हेतु विस्तृत दिशानिर्देश राज्य की ओर से जारी किए जाएंगे |
2. लाउडस्पीकर स्कूल- ऐसी पंचायतें जो अपने पास उपलब्ध लाउडस्पीकर का उपयोग बच्चों को सिखाने में इस्तेमाल करना चाहते हैं वे इस कार्य के लिए इच्छुक सक्रिय शिक्षक की पहचान कर उनके साथ समुदाय से कुछ सुविधादातों की पहचान कर समुदाय की सहमति से समय सारिणी एवं योजना बनाकर नियमित कक्षाओं का संचालन किसी एक कक्ष या खुले क्षेत्र में कुछ बच्चों को सामने बिठाकर एवं शेष को अपने अपने घर, चबूतरें एवं छोटे छोटे समूह में बिठाकर सीखने के अवसर प्रदान करेंगे | इस कार्य हेतु भी विस्तृत दिशानिर्देश राज्य की ओर से जारी किए जाएंगे |
3. बुलटू के बोल- ऐसे संकुल जंहा बसाहटें दूर दूर और कम संख्या में आबादी बिखरी हुई हो, जंहा नेटवर्क की समस्या हो और अधिकांश लोगों के पास साधारण फोन बिना इंटरनेट की सुविधा के हो, वंहा संकुल समन्वयक कुछ शिक्षकों के साथ साप्ताहिक योजना बनाकर कुछ सीमित संख्या में ऑडियो पाठों को हाट-बाजार के दिन पालकों के मोबाइल लेकर उनके ब्लू-टूथ को आन कर उनके मोबाइलों में ट्रांसफर कर बच्चों को सुनाने हेतु उपलब्ध करवाया जाएगा |
4. गृहकार्य तुंहर दुआर- बच्चों को नियमित स्वाध्याय एवं एक दूसरे से सीखने हेतु गाँव/ वार्ड में अलग अलग जगहों में अलग अलग कक्षाओं के लिए श्यामपट बनाकर उसमें प्रतिदिन शिक्षक द्वारा समुदाय या बड़ी कक्षाओं के बच्चों के सहयोग से निर्धारित मुद्दों पर गृहकार्य लिखकर उपलब्ध करवाया जाएगा | बच्चे अपनी सुविधा से अपने कक्षा के श्यामपट के

सामने आकर उन्हें प्रदत्त गृहकार्य को कापी में लिखकर उन्हें पूरा कर शिक्षकों के साथ साझा करेंगे |

5. वर्कशीट्स एवं प्रोजेक्ट कार्य- कोरोना संकट को ध्यान में रखते हुए हम एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार वैकल्पिक पाठ्यक्रम के अनुसार बच्चों को कोर्स पूरा करने के बदले विभिन्न लर्निंग आउटकम को फोकस कर उन्हें मजबूत करने की दिशा में कार्य करेंगे | प्राथमिक स्तर पर मूलभूत भाषाई/ गणितीय कौशलों के विकास में, उच्च प्राथमिक स्तर पर विभिन्न परियोजनाओं को मिलकर पूरा करने, समस्या /अनुभव आधारित शिक्षण (Problem solving method/ experiential learning) पर फोकस होकर कार्य करेंगे | स्थानीय स्तर पर प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी द्वारा विभिन्न विषयों में अभ्यास हेतु वर्कशीट्स, अभ्यास सामग्री आदि साझा किए जाते हुए बच्चों को Meaningful engagement में सक्रिय रख सकेंगे |
6. शिक्षकों द्वारा काल सेंटर- कुछ स्थलों में शिक्षकों ने आपस में कक्षाएं एवं विषय बांटकर उनके नंबर एवं उनको बच्चों के द्वारा विषय संबंधी समस्या पूछने के लिए अपने नबंर को विभिन्न समूहों से साझा किया गया है | ऐसे शिक्षक अपने निर्धारित समय में बच्चों से उनकी शंकाओं को पूछने का समय देते हैं और उनकी शंकाओं का एक एक कर वापस फोन कर समाधान करते हैं और पूछे गए पाठ को अच्छे से समझाने का प्रयास करते हैं |
7. आनलाइन पाठ- उपरोक्त सभी आफलाइन उपायों में से बेहतर उपायों को अपने अपने क्षेत्र में लागू करते हुए जिन जिन क्षेत्रों में नेटवर्क की सुविधा है और पालकों के पास स्मार्टफोन हैं तो ऐसे बच्चों के लिए वर्चुअल क्लासरूम के माध्यम से आनलाइन शिक्षा की सुविधा भी जारी रहेगी | आनलाइन सामग्री बच्चों के लिए उपलब्ध करवाते समय डिजिटल गाइडलाइन –"प्रज्ञता" को ध्यान में रखा जाए |

जिलों से ऐसे विभिन्न उपायों में से वे अपने क्षेत्र में किन उपायों को अपनाए जाने की तैयारी कर रहे हैं, इसकी जानकारी गूगल फॉर्म के माध्यम से एकत्रित की जा रही है | जब तक शालाएं नियमित रूप से नहीं खुल जाती, तब तक बच्चों का सीखना जारी रखने हेतु समुदाय की सहमति लेकर सुरक्षा के सभी प्रावधानों का पालन करते हुए पढाई प्रारंभ करवाएं | समुदाय द्वारा प्रदत्त किसी सुरक्षित स्थान में बच्चों को दूरी बनाकर मास्क/ गमछा पहनाकर बिठाते हुए, समय समय पर हाथ धोने का अवसर प्रदान करते हुए स्वास्थ्य विभाग द्वारा कोरोना से सुरक्षा हेतु जारी सभी निर्देशों का कडाई से पालन करते हुए उपरोक्त सभी कार्य सुनिश्चित किए जाएँ | इस क्षेत्र में बेहतर कार्य करने वालों को पुरस्कृत किया जाना चाहिए | बच्चों को किसी न किसी वैकल्पिक विधि का इस्तेमाल कर सीखने का अवसर देते हुए सक्रिय रखें वरना धीरे-धीरे वे विभिन्न सीखी हुई दक्षताएं भूलने लगेंगे | फिर उन्हें वापस पटरी पर लाने हेतु बहुत मेहनत करनी होगी | पूरा विश्वास है आप अपने विद्यार्थियों के साथ ऐसा नही होने देंगे |

एजेंडा तीन- लाउडस्पीकर स्कूलों का विस्तार

समुदाय की इच्छा से अब विभिन्न पंचायतों में लाउडस्पीकर स्कूल चलाने की मांग आ रही है | किसने सोचा था कि लाउडस्पीकर भी एक दिन स्कूली बच्चों को पढ़ाने के काम आएगा | जिन पंचायतों में ऐसे स्कूल चल रहे हैं, वहां रोज सीखने-सिखाने के नए नए तरीके सामने आ रहे हैं | उत्साही और नवाचारी शिक्षक जब ऐसे कार्य अपने हाथ में लेते हैं तो अपने काम की समीक्षा एवं चिंतन कर उसमें लगातार सुधार लाने का प्रयास करते रहते हैं | लाउडस्पीकर स्कूलों में किए जा रहे कुछ बदलाव इस प्रकार से हैं-

- प्रतिदिन इन स्कूलों की शुरुआत राज्यगीत से की जाती है | बच्चे भी साथ में गीत दोहराते हैं | बस्तर जिले में राज्यगीत को स्थानीय भाषा में अनुवाद किया गया है |
- शिक्षकों को अकेले माइक के सामने बोलने से पढ़ाने वाली फीलिंग नहीं आती | इसलिए कुछ शिक्षक जब लाउडस्पीकर से पढ़ाते हैं तो कुछ बच्चों को प्रतिदिन बदल बदल कर अपने सामने बिठाते हैं | ऐसा करने से उनके भीतर पढ़ाने की वास्तविक फीलिंग आती है | बच्चों को भी ऐसा करने से अपनी कक्षा याद रहेगी |
- हमारे वेबसाइट में बहुत सारे ऑडियो सामग्री उपलब्ध है | इनमें से आवश्यकतानुसार सामग्री का चयन कर केंद्र में रखा जा सकता है | अपने साथी शिक्षक या समुदाय से सहयोग कर रहे शिक्षा सारथी को दिया जा सकता है | जब आप किसी वजह से नहीं आ रहे हैं तो इनका इस्तेमाल बच्चों को सिखाने के लिए किया जा सकता है | बच्चों को बीच-बीच में अभिव्यक्ति का अवसर दे सकते हैं |
- अंग्रेजी भाषा सिखाने के लिए लाउडस्पीकर का प्रयोग करने से समुदाय में भी लोगों को अंग्रेजी सीखने का इच्छा जागृत होती है और समर्थन मिलता है |
- गाँव के बड़े-बुजुर्गों को समय-समय पर बच्चों को कहानी सुनाने इस स्कूल में आमंत्रित किया जा सकता है | वे लाउडस्पीकर से कहानी सुना सकते हैं |
- बच्चों को श्रुतलेख का नियमित अभ्यास इस माध्यम से करवाया जा सकता है | छोटे-छोटे पैराग्राफ को रिकार्ड कर या बोलकर उसमें से बार-बार आ रही ध्वनियों को छोटी कक्षा के बच्चे, कुछ शब्दों को थोड़ी बड़ी कक्षा के बच्चे और पूरा पैराग्राफ आगे की कक्षा के बच्चों को लिखने की अपेक्षा की जा सकती है | घर में पालक एवं अन्य लोग भी इस श्रुतलेख को सुनकर लिखने का अभ्यास कर सकते हैं |

छत्तीसगढ़ में लाउडस्पीकर से पढ़ाने की अभी शुरुआत ही हुई है | उपयोग करते करते हम संकट की घड़ी में बच्चों को सिखाने के इस उपकरण को शिक्षण के एक बेहतरीन माध्यम के रूप में आगे भी इस्तेमाल कर सकते हैं | चलिए इसे और बेहतर शिक्षण टूल के रूप में इस्तेमाल करना सीखें |

एजेंडा चार- पढई तुंहर पारा का विस्तार

स्कूल कब खुलेंगे, इसका कोई भरोसा नहीं है | तब तक हम बच्चों को यूं ही नहीं छोड़ सकते | बहुत से पालकों ने बच्चों के खाली रहने से बिगड़ने के चिंता जताई है | वे अपने बच्चों को सुरक्षित पर किसी न किसी रचनात्मक कार्यों में व्यस्त देखना चाहते हैं | ऐसे में हमारे कुछ शिक्षक साथियों ने स्कूल के बदले बच्चों के घर के आसपास ही उनके पढाई का इंतजाम करने का प्रयास किया है | बच्चों को पढ़ाने के इस माडल के अंतर्गत कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं-

- स्कूल के शिक्षक अपने विद्यार्थियों को बसाहट एवं उनके ग्रेड के आधार पर छोटे-छोटे समूहों में बांटकर समुदाय के सहयोग से उन्हें सीखने के लिए अलग अलग स्थान निर्धारित कर उनके सीखने का इंतजाम करते हैं |
- समुदाय से पढ़े-लिखे और सिखाने के इच्छुक कुछ लोगों को इकट्ठा कर उनके माध्यम से बच्चों को सिखाने का इंतजाम करना होगा | इसमें डी.एड./ बी.एड. के विद्यार्थी, सेवानिवृत्त शिक्षक, पढ़े-लिखे युवा, घरेलू महिलाएं, माताओं आदि की सेवाएं ली जा सकती है |
- इन्हें बच्चों का स्तर एवं उनके बारे में कुछ आवश्यक बातें जो उन्हें सिखाने में मदद करें, उनकी पृष्ठभूमि आदि को साझा करते हुए उनके सीखने के तरीकों एवं प्राथमिकताओं पर भी समुदाय के शिक्षकों से चर्चा कर उन्हें जानकारी देनी चाहिए, ऐसा करने से प्रत्येक बच्चे पर व्यक्तिगत ध्यान देने का अवसर मिल सकता है | इसी अनुसार उनके सीखने की योजना बनाई जा सकती है |
- शहरी क्षेत्र में कालेजों में पढाई कर रहे बच्चों को ऐसे कार्यों के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है | उनकी कक्षाओं को उन्ही के नाम से संचालित किया जाकर उन्हें सम्मानित किया जाना चाहिए | समुदाय से योग्य शिक्षकों का चयन करते समय बच्चों की सुरक्षा का भी विशेष ध्यान रखना होगा | बच्चों को पढ़ाने के लिए ऐसा उपयुक्त स्थान एवं समूह चुने जिससे किसी प्रकार की असुरक्षा का प्रश्न ही न उठे | बच्चों की सुरक्षा सर्वोपरि है, कोई समझौता नहीं कर सकते | शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों को अलग अलग बसाहटों में सिखाने की व्यवस्था करते हुए समुदाय के सदस्यों को उन्हें पढ़ाने के लिए तैयार कर लेना चाहिए | अपना रूट चार्ट इनके साथ साझा करते हुए आपके वहां पहुचंने से पहले बच्चों को इकट्ठा करने, बिठाने का कार्य शाला सारथी कर सकते हैं |

एजेंडा पांच- प्राथमिक कक्षाओं में पढाई

कोविड के इस संकट के दौरान बच्चों को पढाई का बोझ या कोर्स पूरा करने के पीछे बिलकुल भी नहीं पड़ना चाहिए | बच्चे इस बुरे समय को कैसे भी हंसी-खुशी निकाल लें और अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण पडाव को पार कर लें, यही बहुत है | प्राथमिक कक्षाओं में हमें मुख्य रूप से निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

पाठ्यपुस्तक के सभी पाठों को पूरा करने के बदले विभिन्न विषयों के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम को विभिन्न तरीकों से पूरा करने पर ध्यान देना होगा |

प्रत्येक विषय के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम को ध्यान में रखकर कुछ सीमित दक्षताओं पर फोकस करना होगा | कुछ दक्षताएं इस प्रकार से हो सकती है-

हिन्दी- बच्चा बोली हुई बात को सुनकर अच्छे से समझ लेते है –सुनकर समझ सकता/ती है

बच्चा अपने अनुभव के मुद्दे पर अपनी बात सुनने वाले को बोलकर समझा सकता/ती है

बच्चा अपने आयु के अनुरूप स्तर के विभिन्न लेखों/ प्रिंट को पढ़कर समझ सकता/ती है

बच्चा अपने आयु के अनुरूप स्तर के मुद्दों पर अपने बातों को लिखकर समझा सकता/ती है

विभिन्न भाषाई कौशलों पर स्वतंत्र रचनात्मक अभिव्यक्ति कर सकता/ती है

गणित- बच्चा शून्य की समझ के साथ गिनती और उसके मूर्त-अमूर्त संबंध को समझता है

बच्चा अपने दैनिक जीवन में आवश्यकतानुसार गणित की सभी मूलभूत संक्रियाओं का सही सही उपयोग कर सकता है

बच्चा अपने दैनिक जीवन में उपयोगी विभिन्न कौशल जैसे लंबाई, वजन, दूरी, समय, कैलेण्डर, मुद्रा, लाभ-हानि एवं आकृतियों की समझ रखता है |

पर्यावरण- बच्चा अपने आसपास की समझ रखता है और अपने चारों ओर होने वाले परिवर्तनों पर ध्यान देता है और वातावरण को बेहतर/ नुकसान करने वाले कारकों की समझ रखता है

अपने जीवन में उपयोग में लाए जाने वाले वस्तुओं की जानकारी एवं उनके बनने में सहायक अवयवों की जानकारी रखता है, विभिन्न जीवों/ पौधों के जीवन चक्र को समझता है

अपने आसपास रोजगार के विभिन्न अवसरों, कार्यालयों एवं स्व-रोजगार के क्षेत्रों की प्राथमिक समझ एवं जानकारी रखता है और जीवन में इनके महत्व को समझता है

क्या उपरोक्त दक्षताओं को ध्यान में रखकर हम विषय के विभिन्न लर्निंग आउटकम को प्राप्त कर सकते हैं ? कैसे ? अपने पीएलसी के साथ चर्चा करें |

एजेंडा छह – उच्च प्राथमिक कक्षाओं में पढाई

कोविड के दौरान जंहा प्राथमिक स्तर पर मूलभूत आधारभूत कौशलों के विकास पर ध्यान देना होगा वहीं उच्च प्राथमिक कक्षाओं में हमें मुख्य रूप से निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

उच्च प्राथमिक स्तर पर हमें कक्षा के भीतर बच्चों को बिठाकर रोज पूरे समय भाषणबाजी करने से बचना चाहिये | ऐसा करने से बच्चे बोर हो जाएंगे एवं आना बंद कर सकते हैं

इस आयु समूह में बच्चों को जिम्मेदारी लेने दें और अपने सीखने की जिम्मेदारी जब वे स्वयं लेने लगेंगे तो आपका आधा काम आसान हो जाएगा और बच्चे सीखने लगेंगे

इस कक्षा समूह को हमें अवधारणाओं को समझाने के बाद उसे स्थापित करने कुछ प्रोजेक्ट्स कक्षा अवधि के बाद करने हेतु देना चाहिए | ये व्यक्तिगत, परिवार में मिलकर, अपने साथियों के साथ छोटे और बड़े समूहों में हो सकते हैं |

भाषा सीखने के लिए- इन कक्षाओं में भाषा में पकड़ बनाने हम ऐसे प्रोजेक्ट दे सकते हैं –

रोज अखबार पढने का अवसर देते हुए मुख्य समाचारों पर चर्चा करते हुए कुछ समाचारों को, घटनाओं को एक पत्रकार के रूप में सभी बच्चों को लिखने, टीवी समाचार वाचक के रूप में खबरें पढने, पुस्तकालय से किसी पुस्तक को पढ़कर उसके बारे में ऐसा बोलना, वर्णन करना जिससे अन्य बच्चे भी उस किताब को इशू करवाकर पढने हेतु प्रेरित हो जाएं

गणित समझने के लिए – बच्चों को अपने दैनिक जीवन से सबंधित किसी समस्या को देते हुए मिलकर एक टीम के रूप में हल करवाने का प्रयास करें | बच्चों को अपने क्षेत्र में कुछ सर्वे कर उससे प्राप्त डाटा से संख्या, कम ज्यादा, औसत, प्रतिशत, लाभ-हानि के सवाल कर सकते हैं | जैसे गांव में कितने घरों में कितने दो पहिया, चार पहिया वाहन, दो पैर वाले और चार पैर वाले जानवर हैं ? इसकी जानकारी लेकर प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण करवाएं | उनसे अपने घर का बजट और हिसाब-किताब का रख-रखाव करते हुए उनका भी विश्लेशण करवाएं |

विज्ञान में रूचि लेने के लिए – विज्ञान के विभिन्न तथ्यों की समझ विकसित करने बच्चों के साथ विभिन्न गतिविधियाँ जैसे हमारी संस्कृति एवं परंपराओं में छिपे विज्ञान, घर एवं आसपास पाए जाने वाले विभिन्न जीव-जंतुओं के जीवन-चक्र का अध्ययन, कोरोना से जुड़े विभिन्न खबरों एवं सुरक्षा उपायों, संक्रमण की दर एवं लाकडाउन के प्रभाव आदि पर अवलोकन करने हेतु प्रोजेक्ट दिया जा सकता है | गोबर से कम्पोस्ट खाद कैसे बनाते हैं, गोबर गैस कैसे बनता है और उसे घर में लगाने से क्या फायदा होता है, इन सबकी जानकारी संकलित करने कहें |

प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के साथ मिलकर प्रतिदिन सीखने की गतिविधि डिजाइन करें |

एजेंडा सात- डिजिटल लर्निंग दिशानिर्देश-प्रज्ञता

कोरोना के संकट से स्कूल बंद होने की वजह से बच्चों का सीखना जारी रखने बहुत से नवाचारी उपाय हो रहे हैं | इनमें से बहुत से उपाय डिजिटल शिक्षा से संबंधित हैं | बच्चों के लिए आनलाइन शिक्षा का बहुत अधिक उपयोग होने की वजह से भारत सरकार ने प्रज्ञता के नाम से एक गाइडलाइन जारी किया है |

प्रज्ञता गाइडलाइन तैयार करते समय इन आठ चरणों को ध्यान में रखा गया है-

योजना-समीक्षा-व्यवस्था-गाइड-बात-असाईन-ट्रेक-सराहना (PLAN-REVIEW-ARRANGE-GUIDE-YAK-ASSIGN-TRACK-APPRECIATE) अर्थात पहले सही योजना बनाकर उसकी समीक्षा हो, फिर उसके लिए संसाधन सुलभ करते हुए बच्चों को गाइड किया जाए, फिर उनसे बात करके उन्हें विषयवस्तु उपलब्ध करवाई जाए | अंत में उनसे फीडबैक लेकर उनकी सराहना की जाए |

मुख्य रूप से डिजिटल शिक्षा के लिए प्रज्ञता गाइडलाइन बनाते समय स्क्रीन समय को कम करने या कटौती करने की दिशा में प्रयास किया जा रहा है | इन निर्देशों को स्कूलों को मानना आवश्यक होगा | इस हेतु निम्नलिखित बिन्दुओं पर हमें ध्यान देना होगा-

- घर पर बच्चों के लाकडाउन रहने की वजह से उन्हें आनलाइन, मिश्रित, डिजिटल शिक्षा के माध्यम से सिखाने का प्रयास किया जा रहा है
- प्री-प्रायमरी कक्षा के बच्चों के लिए प्रतिदिन अधिकतम तीस मिनट की ही क्लास होनी चाहिए
- कक्षा एक से आठ तक प्रतिदिन दो क्लासेस जो कि पैंतालीस- पैंतालीस मिनट से अधिक न हो, से अधिक आनलाइन कक्षाएं इस स्तर पर नहीं होनी चाहिए
- कक्षा नवमीं से बारहवी तक के बच्चों के लिए पैंतालीस- पैंतालीस मिनट के चार कक्षाएं प्रतिदिन ली जा सकती हैं |
- छात्रों को दो लगातार कक्षाओं के बीच 10-15 मिनट का ब्रेक देना होगा ताकि अगली कक्षा पर ध्यान केंद्रित करने के लिए और अपने आप को तरोताजा, आराम और फिर से सक्रिय कर सके।

डिजिटल शिक्षा के दौरान शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य कल्याण के लिए दिशानिर्देश

- लैपटॉप या मोबाइल द्वारा सीखते समय कैसे बैठना चाहिये बहुत महत्वपूर्ण है
- कुर्सी पर हमेशा सीधे बैठने की मुद्रा में बैठें
- डिजिटल डिवाइस के सामने बैठते हुए, समय-समय पर खड़ा होना और कुछ व्यायाम करना जैसे सिर, गर्दन या हाथ को घुमाना आदि

एजेंडा आठ- प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी

छत्तीसगढ़ में प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी के माध्यम से विगत कुछ वर्षों में बहुत से कार्य हुए हैं | स्वस्फूर्त शिक्षकों ने स्वयं से अपने आपको स्कूल समय से अलग समय में बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के लिए अपने-अपने सतत क्षमता विकास की जिम्मेदारी लेते हुए एक से बढ़कर एक काम किए हैं | इन प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी की सफलता के बाद इन्होने अपना काफी विस्तार किया और बहुत से पीएलसी अपना दायरा संकुल से विकासखंड, फिर यहाँ से जिला, जिले से राज्य और कुछ पीएलसी राज्य से बाहर के शिक्षकों को भी जोड़कर अपना कार्य सरलतापूर्वक कर रहे हैं | अब हमने कोरोना को ध्यान में रखते हुए आगे कोई भी प्रशिक्षण आमने सामने नहीं होने की वजह से छोटे छोटे समूहों में फोकस होकर इस संक्रमण के दौरान कुछ अच्छा करने के उद्देश्य से हमें पीएलसी को छोटे साइज़ का बनाने का अनुरोध किया जिसके आधार पर अब राज्य में साढ़े पांच हजार से अधिक प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटी बन गए हैं | इन पीएलसी के माध्यम से हम निम्नलिखित कार्यों की अपेक्षा करते हैं –

- नियमित रूप से आपस में अपने शालाओं में बेहतर शिक्षा देने हेतु प्लान बनाकर उनका क्रियान्वयन करने हेतु पहल करेंगे – planning for improvement
- अपने सोशियल मीडिया समूह में बच्चों को सिखाने के रोचक तरीकों को पोस्ट कर एक दूसरे को नई नई जानकारी देने हेतु सक्रिय रहेंगे – idea sharing
- बच्चों की शिक्षा सुविधा जारी रखे जाने समस्त नियमों का पालन कर वैकल्पिक व्यवस्थाएं करते हुए नवाचारी उपाय सुझाना – innovations for alternative education during covid time
- एक विकासखंड या जिले में अलग अलग पीएलसी अपने रूचि एवं विशेषज्ञता के आधार पर अलग अलग काम लेकर उसमें विशेषज्ञता हासिल कर एक दूसरे को सिखाना एवं सहयोग करना
- स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार बच्चों को सीखने में सक्रिय रखने हेतु प्रतिदिन विभिन्न विषयों के लिए गतिविधियाँ / पठन सामग्री विकसित करना

अपने विकासखंड से संपर्क कर आपके अपने नवीन पीएलसी के बारे में जानकारी लेकर अपना सक्रिय समूह बनाकर वर्चुअल मीटिंग लेकर सभी बच्चों को सीखने के अवसर देना, शिक्षा सारथी के माध्यम से पढ़ाने की व्यवस्था करेंगे |

एजेंडा नौ- शाला प्रबन्धन समिति की बैठक

राज्य में काफी समय के बाद शिक्षकों एवं समुदाय की पहल के आधार पर बच्चों के वैकल्पिक सीखने की सुविधा प्रारंभ की जा रही है | विभिन्न भागों से सक्रिय एवं उत्साही शिक्षकों ने अलग अलग नवाचार कर नए नए मोडल विकसित कर उन पर कार्य किया है जिसे अब राज्य भर में विस्तार किया जा रहा है | बच्चे काफी समय तक घर के अन्दर बंद रहने के बाद अपने दोस्तों के साथ पुनः सीखना सिखाना प्रारंभ करने जा रहे हैं | राज्य में पाठ्य-पुस्तकें एवं गणवेश आदि का वितरण भी प्रारंभ हो रहा है | ऐसे में हम सभी को अपने अपने शाला में गठित शाला विकास समिति की एक बैठक आयोजित करनी चाहिए |

शाला प्रबन्धन समिति की बैठक आयोजित करते समय निम्नलिखित मुद्दों पर ध्यान देते हुए बैठक का एजेंडा तय कर कार्यक्रम प्रारंभ किया जा सकता है –

- शाला में बच्चों के प्रवेश के लिए आवश्यक तैयारी एवं पलायन से लौटे बच्चों की शिक्षा हेतु समुचित व्यवस्थाएं
- बच्चों को विभिन्न सुविधाएँ यथा पाठ्य-पुस्तक, गणेश, सूखा मध्याह्न भोजन आदि के वितरण हेतु व्यवस्थित योजना बनाकर क्रियान्वयन में सहयोग
- शाला से बाहर के बच्चों की पहचान कर उन्हें उनके आयु अनुरूप कक्षा के लिए निर्धारित दक्षताओं तक लाने हेतु सेतु पाठ्यक्रम
- शाला समुदाय से चर्चा कर बच्चों को वैकल्पिक सीखने के उचित योजना पर विस्तार से चर्चा कर उपयुक्त माडल का चयन कर उसका क्रियान्वयन
- समुदाय से कम से कम दो से पांच ऐसे व्यक्तियों की शिक्षा सारथी के रूप में पहचान करना ताकि वे बच्चों को शिक्षा देने में शिक्षकों का आवश्यक सहयोग कर सकें
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों को स्थानीय भाषा का उपयोग कर सिखाने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं एवं शिक्षकों को इस कार्य हेतु सभी सहयोग
  बच्चों को सीखना जारी रखने के नए विकल्प को प्रारंभ करने हेतु किसी नए तरीके से प्रवेश उत्सव जैसा माहौल बनाकर अधिक से अधिक बच्चों को प्रवेश देना, विशेषकर नवप्रवेशी बच्चों को प्रवेश की घटना को यादगार बनाने हेतु उत्सव का माहौल बनाना

एजेंडा दस- मिस्ड काल गुरूजी

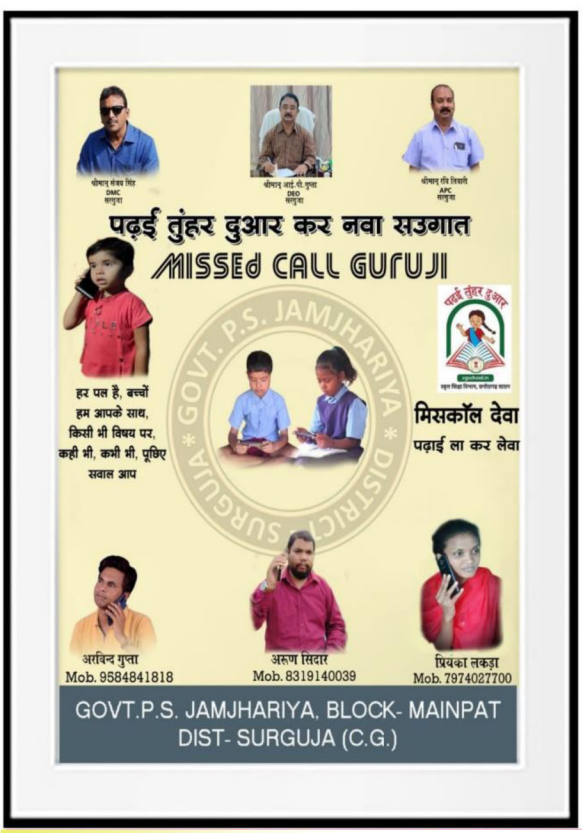

बच्चों के सीखने की इच्छा को बलवती करते हुए उनको आवश्यक सहयोग देने के उद्देश्य से कुछ शिक्षकों ने मिस्ड काल गुरूजी नामक योजना प्रारंभ की गयी है | आप भी अपनी शालाओं/ संकुलों/ पीएलसी के क्षेत्रों में ऐसी योजना बनाकर अलग अलग विषयों के लिए विशेषज्ञों को इस कार्य के लिए प्रेरित किया जाता है | इनके नंबर बच्चों को उपलब्ध करवाते हुए एक निश्चित समय का निर्धारण कर बच्चों के मिस्ड काल लेकर वापस उन्हें काल कर उनकी शंकाओं का समाधान करने का प्रयास किया जाता है |